



न्यायालय उपखण्ड अधिकारी, चूरु (चूरु)

(पीठासीन अधिकारी : श्री सुनील कुमार-1 आर.ए.एस.)

वाद पत्र सं. 109/2024

दर्ज दिनांक : 01.10.2024

संजय

बनाम

अनवर आदि

उपस्थित अधिवक्ता

प्रार्थी:-श्री नन्दराम राहड़

अप्रार्थी:-श्री राजेन्द्र कुमार राजपुरोहित

प्रार्थना पत्र:- आदेश-07 नियम-11

सिविल प्रक्रिया संहिता-1908

: निर्णय :

न्यायालय में विचाराधीन उपरोक्त अनुवानी दावा में प्रतिवादी सं. 4 की ओर से प्रार्थना पत्र अन्तर्गत आदेश 7 नियम 11 सी.पी.सी. का पेश कर निवेदन किया कि

1. वादी संजय कुमार द्वारा दावा संख्या 109/24 व स्थगन प्रार्थना-पत्र संख्या 56/24 अनुवानी संजय कुमार बनाम अनवर आदि न्यायालय के समक्ष गलत आधार पर दावा पेश किया गया है।
2. वादी द्वारा खेत खसरा संख्या 2547/162 तादादी 4.2492 हैक्ट. वाके रोही चूरु में वादी ने 87/2800 हिस्सा खातेदारी का गलत अंकित किया गया है क्योंकि वादी द्वारा 87/2800 हिस्सा सम्पूर्ण वादी द्वारा जरिए बैनामा दिनांकित 25.09.2009 क्रमशः अजाज बानो पत्नी शोकत अली खां जाति कायमखानी निवासी राजपुरा तहसील तारानगर जिला चूरु व मैमन बानो पत्नी शकरू खां जाति कायमखानी निवासिनी वार्ड नं. 8 चूरु को विक्रय कर दिया तथा शेष भूमि जरिए एक इकरारनामा दिनांकित 06.09.2011 द्वारा विक्रय कर दी गई है ऐसी स्थिति में वादी का कोई हिस्सा शेष नहीं रहा है वादी को यह भलीभांति ज्ञान रहा है कि उक्त कृषि भूमि में कोई हिस्सा शेष नहीं रहा है इसके बावजूद वादी द्वारा न्यायालय को मुगालते में रखते हुए दावा पेश किया है जो दावा खारिज योग्य है।
3. वादी द्वारा कृषि भूमि खेत खसरा संख्या 2547/162 तादादी 4.2492 हैक्ट. वाके रोही चूरु में 87/2800 हिस्सा आज से करीबन 15 वर्ष पूर्व विक्रय किया जा चुका है इसलिए वादी को कोई वाद आधार व वाद कारण प्राप्त नहीं है। ऐसी स्थिति में वादी का दावा वाद आधार व वाद कारण के अभाव में चलने योग्य नहीं है जो खारिज योग्य है।

अतः प्रार्थना-पत्र प्रस्तुत कर निवेदन है कि प्रार्थी/प्रतिवादी का प्रार्थना-पत्र स्वीकार फरमाया जावे। वादी का दावा मय खर्चा खारिज फरमाया जावे व हर्जा खर्चा प्रार्थी/प्रतिवादी को दिलवाया जावे।



अधिकारी



अप्रार्थी की ओर से जवाब आदेश 7 नियम 11 जा.दी. निम्नानुसार पेश है :-

1. प्रार्थना-पत्र की मद संख्या 1 जो प्रतिवादी ने अपने प्रार्थना-पत्र को रंगत देने के आधार से गलत अंकित किए होने से अस्वीकार है।
2. वादी प्रार्थी द्वारा संपूर्ण रकबा कतई विक्रय नहीं किया गया है अन्य व्यक्ति के द्वारा बैनामा रकबा किया होना पेश कर अदालतवाला को भ्रमित करने का प्रयास किया गया है इस मद में अंकित तथ्य गलत निराधार है अपंजीकृत दस्तावेजात व वादी द्वारा तहरीर न होना व प्रतिवादी द्वारा गलत पेश होने से प्रार्थना-पत्र खारिज योग्य है।
3. प्रार्थना-पत्र की मद संख्या 3 गलत निराधार अंकित होने से गलत है वादी अप्रार्थी आप भी खातेदार रकबा हैं तथा खातेदार होने से वादी विभाजन रकबा का अधिकारी है तथा प्रार्थी/प्रतिवादी द्वारा दावा में जवाबदेही को देरीना करने के उद्येश्य से गलत आधारों पर प्रार्थना-पत्र पेश किया है जो चलने योग्य नहीं है।
4. प्रतिवादी द्वारा विचारण से तय होने वाले बिन्दुओं को धारा 7-11 सी.पी.सी. में गलत लाया गया है। प्रकरण में जवाबदेही व साक्ष्य का प्रक्रम शेष है पर उचित प्रक्रम पर ही प्रतिवादी बिन्दु ला सकता है गलत स्टेज पर गलत तथ्यों के आधार पर जवाबदेही से बचने के लिए निराधार प्रार्थना-पत्र लाया होने से खारिज योग्य है।

अतः जवाब पेश कर निवेदन है कि प्रार्थी प्रतिवादी का प्रार्थना-पत्र मय खर्चा खारिज फरमाया जावे।



प्रकरण में उभयपक्षकारान की उक्त प्रार्थना पत्र पर बहस सुनी गई। दौराने बहस विद्वान अधिवक्ता प्रतिवादी/प्रार्थी ने दौराने जिरह प्रार्थना-पत्र के तथ्यों को दौहराते हुये प्रतिवादी का सिविल प्रक्रिया संहिता-1908 के आदेश-7 नियम-11 के अन्तर्गत प्रार्थना-पत्र स्वीकार किया जाकर दावा वादी खारिज किया जाने का निवेदन किया। दौराने बहस विद्वान अधिवक्ता वादी/अप्रार्थी ने प्रार्थी/प्रतिवादी का सिविल प्रक्रिया संहिता-1908 के आदेश-7 नियम-11 के अन्तर्गत प्रार्थना-पत्र खारिज फरमाया जाने का निम्न प्रकार निवेदन किया-

- प्रार्थी अधिवक्ता द्वारा प्रार्थना-पत्र के साथ कार्यालय उप पंजीयक, चूरू की दिनांक 25.09.2009 को पुस्तक संख्या 1 जिल्द संख्या 209 में पृष्ठ संख्या 128 क्रम संख्या 2009002890 पर पंजीबद्ध किया गया विक्रय-पत्र की प्रमाणित प्रतिलिपि संलग्न की गई है जिसमें वादी द्वारा 10.44 विश्वा (हिस्सा) मे 4.41 विश्वा (हिस्सा) जरिये विक्रय-पत्र विक्रय की गई है। इसी प्रकार कार्यालय उप पंजीयक, चूरू की दिनांक 25.09.2009 को पुस्तक संख्या 1 जिल्द संख्या 209 में पृष्ठ संख्या 127 क्रम संख्या 2009002889 पर पंजीबद्ध किया गया विक्रय-पत्र की प्रमाणित प्रतिलिपि संलग्न की गई है जिसमें वादी द्वारा 4.41 विश्वा (हिस्सा) जरिये विक्रय-पत्र विक्रय की गई है। इसी प्रकार वादी द्वारा जरिये इकरारनामा विक्रय की गई है। अतः वादी के पास कोई भी खातेदारी अधिकार शेष नहीं रहा। इस कारण वादी को कोई वाद-कारण उपलब्ध नहीं है और वाद प्रथम दृष्टया खारिज किया जाना योग्य है। वादी/अप्रार्थी ने प्रार्थना-पत्र का विरोध किया, परन्तु अपने उत्तर में यह स्वीकार नहीं किया कि वादी के पास उपरोक्त भूमि में कोई हिस्सा वर्तमान में विद्यमान है, न ही प्रस्तुत पंजीकृत विक्रय-पत्रों के संबंध में कोई ठोस चुनौती या निरस्तीकरण का आधार रखा गया।

- प्रतिवादी द्वारा प्रस्तुत पंजीकृत विक्रय-पत्रों (Registered Sale Deeds) से यह स्पष्ट एवं निर्विवाद रूप से परिलक्षित होता है कि वादी द्वारा अपने हिस्से का सम्पूर्ण भू-भाग स्वेच्छा से विक्रय कर दिया गया है। जब वादी के पास विवादित भूमि में कोई खातेदारी हिस्सा अथवा अधिकार ही शेष नहीं है, तब उसके द्वारा संस्थापित वर्तमान दावा पूर्णतया वाद-आधार एवं वाद-कारण से रहित है।
- प्रकरण में पत्रावली का अवलोकन किया गया व बहस पर मनन किया गया है। बाद पत्रावली अवलोकन व मनन बहस ज्ञात होता है कि प्रकरण सिविल प्रक्रिया संहिता-1908 के आदेश-7 नियम-11 के प्रार्थना पत्र से संबंधित है। प्रकरण में तथ्यों के कानूनी बिन्दुओं के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषण से पूर्व सिविल प्रक्रिया संहिता-1908 के आदेश-7 नियम-11 का उद्धरण यहां प्रासंगिक है। जो कि इस प्रकार है:-

11. Rejection of plaint.- The plaint shall be rejected in the following cases:—

(a) where it does not disclose a cause of action;

(b) where the relief claimed is undervalued, and the plaintiff, on being required by the court to correct the valuation within a time to be fixed by the court, fails to do so;

(c) where the relief claimed is properly valued, but the plaint is written upon paper insufficiently stamped, and the plaintiff, on being required by the court to supply the requisite stamp paper within a time to be fixed by the Court, fails to do so;

(d) where the suit appears from the statement in the plaint to be barred by any law;

(e) where it is not filed in duplicate;

(f) where the plaintiff fails comply with the provision of Rule 9.

Provided that the time fixed by the court for the correction of the valuation or supplying of the requisite stamp papers shall not be extended unless the court, for reasons to be recorded, is satisfied that the plaintiff was prevented by any cause of an exceptional nature from correcting the valuation or supplying the requisite stamp papers, as the case may be within the time fixed by the court and that refusal to extend such time would cause grave injustice to the plaintiff.

- इस संदर्भ में माननीय मद्रास उच्च न्यायालय द्वारा Smt. V. Bragan Nayagi vs R. R. Jeyaprakasam प्रकरण में दिनांक 01.04.2015 को दिये गये निर्णय के प्रासंगिक पैरा का उद्धरण प्रासंगिक है जो कि इस प्रकार है:-

While filing an application under Order 7 Rule 11 of the Code of Civil Procedure, the Court is

bound to see whether the case on hand falls within six limbs stated in the said Rule. If the suit is not falling under any of those categories, the plaint cannot be rejected.

- सिविल प्रक्रिया संहिता-1908 के आदेश-7 नियम-11 एवं माननीय मद्रास उच्च न्यायालय द्वारा Smt.V.Bragan Nayagi vs R.R.Jeyaprakasam प्रकरण में दिनांक 01.04.2015 को दिये गये निर्णय में बताये गये 06 आधारों के उक्त साधारण पठन से ज्ञात होता है कि किसी वाद पत्र को निम्न 06 आधारों पर खारीज किये जाने के प्रावधान बनाये गये हैं:-

1. वाद पत्र द्वारा वाद हेतुक का प्रकटीकरण नहीं किया जाना।
2. वाद पत्र में अनुतोष के मूल्य की वास्तविकता से कम गणना करना तथा निर्धारित समय के अवसर के तहत उक्त त्रुटिपूर्ण गणना को दुरुस्त नहीं करना।
3. वाद पत्र में अनुतोष के मूल्य की सटीक गणना करना परन्तु उसी अनुरूप उचित स्टाम्प वाद पत्र पर नहीं लगाना तथा निर्धारित समय के अवसर के तहत उक्त त्रुटिपूर्ण स्टाम्प की कमी को दुरुस्त नहीं करना।
4. वाद पत्र के अभिकथनों के आधार पर वाद-पत्र का विधि द्वारा वर्जित पाया जाना।
5. वाद पत्र का बहु प्रतिलिपियों में प्रस्तुत नहीं किया जाना।
6. वादी द्वारा सिविल प्रक्रिया संहिता-1908 के आदेश-9 के प्रावधानों की अनुपालना करने में विफल होना।



प्रतिवादी अधिवक्ता ने बहस के दौरान अवगत करवाया कि प्रार्थी अधिवक्ता द्वारा प्रार्थना-पत्र के साथ कार्यालय उप पंजीयक, चूरु की दिनांक 25.09.2009 को पुस्तक संख्या 1 जिल्द संख्या 209 में पृष्ठ संख्या 128 क्रम संख्या 2009002890 पर पंजीबद्ध किया गया विक्रय-पत्र की प्रमाणित प्रतिलिपि संलग्न की गई है जिसमें वादी द्वारा 10.44 विश्वा (हिस्सा) में 4.41 विश्वा (हिस्सा) जरिये विक्रय-पत्र विक्रय की गई है। इसी प्रकार कार्यालय उप पंजीयक, चूरु की दिनांक 25.09.2009 को पुस्तक संख्या 1 जिल्द संख्या 209 में पृष्ठ संख्या 127 क्रम संख्या 2009002889 पर पंजीबद्ध किया गया विक्रय-पत्र की प्रमाणित प्रतिलिपि संलग्न की गई है जिसमें वादी द्वारा 4.41 विश्वा (हिस्सा) जरिये विक्रय-पत्र विक्रय की गई है। इसी प्रकार वादी द्वारा जरिये इकरारनामा विक्रय की गई है। अतः वादी के पास कोई भी खातेदारी अधिकार शेष नहीं रहा। इस कारण वादी को कोई वाद-कारण उपलब्ध नहीं है और वाद प्रथम दृष्टया खारिज किया जाना योग्य है। उक्त प्रार्थना-पत्र पर सुनवाई किया जाना न्यायोचित नहीं रह गया है।

1. इस प्रकार उपरोक्त न्यायिक दृष्टान्तों के अवलोकन से स्पष्ट है कि प्रकरण का निर्णयन गुणावगुण के आधार पर किया जाना अपेक्षित है। प्रकरण में उक्त आधार पर दावा सिविल प्रक्रिया संहिता-1908 के आदेश-7 नियम-11 के तहत वाद पत्र के अभिकथनों के आधार पर वाद-पत्र वाद आधार श्रेणी के अन्तर्गत प्रतीत होता है। परन्तु प्रकरण में वादी को कोई वाद-कारण उपलब्ध नहीं होने पर दावा सिविल प्रक्रिया संहिता-1908 के

उपखण्ड अधिकारी
चूरु


आदेश-7 नियम-11 के तहत प्रकरण वादहेतुक उत्पन्न नहीं होने की श्रेणी के अन्तर्गत प्रतीत होता है। अतः सिविल प्रक्रिया संहिता-1908 के आदेश-7 नियम-11 के तहत खारिज किये जाने की श्रेणी के अन्तर्गत प्रतीत होने के आधार पर वादपत्र खारिज किया जाना उचित प्रतीत होता है। अतः



आदेश है कि

प्रतिवादी संख्या 4 का सिविल प्रक्रिया संहिता-1908 के आदेश-7 नियम-11 के तहत प्रार्थना-पत्र स्वीकार किया जाता है। वादी द्वारा दायर वाद वाद-कारण एवं वाद-आधार के अभाव में खारिज किया जाता है।

उक्त निर्णय आज 08.12.2025 को मेरे द्वारा सरे इजलास सुनाया जाकर हस्ताक्षर एवं मोहर युक्त जारी किया गया।


(सुनील कुमार- I) RAS
उपखण्ड अधिकारी
चूरु (चूरु)